PHOENIX

# बारिश के मौसम में मुर्गियों में होने वाली बीमारियाँ एवं उनसे बचाव

बारिश का मौसम गर्मी से तो राहत प्रदान करता है, लेकिन साथ ही कई तरह की बीमारियाँ भी साथ लाता है। बारिश शुरू हेतु ही मुर्गियों में कई तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं, जिनका उचित निदान, इलाज एवं उनसे बचाव अतिआवश्यक है।

कुछ प्रमुख बीमारियाँ एवं उनसे बचाव के उपाय –

## 1. कॉक्सी डियोसिस (कॉक्सी) –

सामान्य भाषा में इसे कॉक्सी भी कहते हैं। जब मौसम गर्म एवं नमीयुक्त होता है, तब यह बीमारी उत्पन्न होती है। यह बीमारी बुरादे में पाए जाने वाले कॉक्सी के ऊसाइट से फैलती है। इस बीमारी में पक्षी अपनी गर्दन बुरादे में झुकाए हुए सुस्त खड़ा रहता है एवं लाल बीट करता है। पक्षियों की मृत्युदर बढ़ती जाती है। पोस्टमार्टम करने पर आंतों में खून मिलता है।

समय रहते निदान होन पर मृत्यृदर में कमी आती है एवं पक्षी स्वस्थ हो जाते हैं।

### बीमारी से बचाव हेतु

i. दाने में उचित मात्रा में एंटीकॉक्सी दवाई डालें।
ii. बुरादे का उचित रख–रखाव करें।
iii. एक भी पक्षी ऐसा दिखे जो अस्वस्थ हो या लाल बीट कर रहा हो, उसे अन्य पक्षियों से अलग कर दें।
iv. कॉक्सी आने पर उसका इलाज मुर्गी विशेषज्ञ के परामर्श पर करें।

## 2. माइकोटॉक्सिकोसिस–

बारिश के मौसम में माइकोटॉक्सिकोसिस एक सामान्य समस्या है। अक्सर कई तरह के माइकोटॉक्सिन दाने में उत्पन्न हो जाते हैं जो पक्षी के लिए नुकसानदायक होते हैं। अफ्लाटॉक्सिन, टी–2 टॉक्सिन, जेरलेनॉन आदि प्रमुख माइकोटॉक्सिन हैं जो पक्षियों की मृत्युदर को बढ़ाते हैं एवं वजन को भी कम करते हैं। अण्डे वाली मुर्गी में अण्डा उत्पादन को कम करते हैं।

### पोस्टमार्टम करने पर –

i. लिवर का आकार बढ़ा हुआ दिखता है।
ii. किडनी में सूजन मिलती है।
iii. गिजार्ड एवं प्रोवेन्ट्रिकुलस में लाल धब्बे दिखाई देते हैं।
iv. गिर्जा की झिल्ली आसानी से अलग हो जाती है।

### बचाव के उपाय

i- दाना उचित गुणवत्ता का एवं फफूंद रहित होत।
ii- दाने का भण्डारण उचित हो, नमी या बारिश से खराब न हो।
iii- दाने में टॉक्सिन बाइण्डर की मात्रा बारिश में बढ़ा देना चाहिये।

iv- टॉक्सिसीसिटी की समस्या आने पर उसका इलाज मुर्गी विशेषज्ञ की सलाह पर करें।

3. एण्टराएटिस (Enterites) एवं नेक्रोटिक एन्टराएटिस (NE) –

दाने एवं बुरादे में नमी होने पर कई तरह के जीवाणुओं की मात्रा बढ़ जाती है जो मुर्गी की आंतों में सूजन व लालपन पैदा करते हैं। मुर्गी की आंतें कमज़ोर हो जाती हैं व पक्षी की पाचन शक्ति कम हो जाती है। आंतों की अंदर की झिल्ली टूट–टूटकर बीट के साथ निकलती है। बीट लालपन लिए रहती है। बीट में बगैर पचा हुआ दाना दिखता है।

यह बीमारियाँ, ई.कोलाई, क्लोस्ट्रीडियम, स्टेफाइलोकाकस नाम जीवाणुओं के कारण होती है। पक्षियों का वजन एवं अण्डा उत्पादन दोनों कम हो जाते हैं।

पोस्टमार्टम करने पर :–

i- आंत में सूजन व लालपन।

ii- आंत में छाले पड़ना व अतिरिक्त सफेद झिल्ली मिलना।

iii- बगैर पचा हुआ दाना मिलना।

बचाव के उपाय

i- बुरादे का उचित रख–रखाव करें।

ii- हमेशा नया, स्वच्छ व सूखा हुआ बुरादा ही इस्तेमाल करें।

iii- पानी में साफ करने वाली अच्छी दवाई (सेनिटाइजर) का इस्तेमाल करें।

iv- दाने को एसिडीफायर या उचित एन्टीमाइक्रोबियल से उपचारित करें।

v- बीमारी आने पर एन्टीबॉयोटिक का इस्तेमाल मुर्गी विशेषज्ञ की सलाह पर करें।

4. अमोनिया निर्माण :–

बारिश के मौसम में बुरादे के गीला होने से उसकी शोखने की क्षमता कम हो जाती है, इस वजह से मुर्गी की बीट को बुरादा शोख नहीं पाता, जिसके कारण शेड में अमोनिया पैदा हो जाती है। यह अमोनिया शरीर के अंदर जाकर टॉक्सिसिटी पैदा करती है। अमोनिया की वजह से मुर्गी दाना कम खाती है एवं वजन कम बढ़ता है। पक्षियों में श्वास नली की बीमारी हो जाती है, जो बाद में सी.आर.डी. के रूप में भी दिखती है।

पोस्टमार्टम करने पर :–

i- श्वास नली में सूजन व लालपन। ii- फेंफड़े में निमोनिया जैसे लक्षण।

iii- लिवर बढ़ा हुआ, किडनी में सूजन।

iv- हृदय बढ़ा हुआ, एवं इसकी झिल्ली में पानी भर जाता है।

बचाव के उपाय

i- बुरादे का रख–रखाव उचित रूप से करें। इसमें चूना व अमोनिया बाइण्डर मिलायें।

ii- गीले बुरादे को बदलकर सूखा बुरादा डालें।

iii- शेड का वेंटीलेशन अच्छा रखें।

iv- उचित लिवर टॉनिक व डायूरेटिक का प्रयोग करें।

v- अमोनिया की समस्या से निजात पाने हेतु उचित परामर्श लें।